आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस समारोह

उपशांत कषाय से संगठन बनता है चिरजीवी : आचार्यश्री महाप्रज्ञ

बीदासर, 3 अप्रैल, 2009।

''भिक्षु स्वामी ने अभिनिश्क्रमण किया वह अभिनिष्क्रमण एक अभियान है। आचार्य भिक्षु ने कषाय प्रबल वाले लोगों से ज्ञान सीखा। जिस-जिस का कषाय प्रबल होता है वहां लड़ाई-झगड़ा, कलह, बिखराव सबकुछ होता है इसलिए उन कारणों को मिटाया जाये जो कषाय की उत्तेजना में निमित्त न बने और निमित्त बनते हैं तो उनको समाप्त किया जावे।''

उक्त विचार तेरापंथ भवन के श्रीमद् मघवा समवरण में आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने 'आचार्य भिक्षु के अभिनिष्क्रमण दिवस' पर प्रवचन के दौरान व्यक्त किये।

आचार्य प्रवर ने फरमाया कि आचार्य भिक्षु ने जिनवाणी का अध्ययन किया। जिस व्यक्ति का कषाय प्रबल होता है तो एक इक्षु के फूल की भांति साधुत्व निष्फल हो जाता हैं। भिक्षु स्वामी ने सोचा था कि मैं जिस पथ पर चलना चाहता हूं वह पथ वीतरागता का, उपशांति का पथ हो और वह उपशांति का तभी हो सकता है जब क्रोध का आवेश न हो, अहंकार का आवेश न हो, बड़प्पन का, पद का लोभ न हो, ममत्व न हो तभी वह पथ अच्छा हो सकता है। स्वामी भिक्षु का यह मत था कि साधु का कोई स्थान नहीं होता।

आचार्य प्रवर ने आचार्य भिक्षु के संस्मरणों को प्रस्तुत कराते हुए फरमाया कि जहां कोई स्थान नहीं भूमि नहीं, पैसा नहीं और कोई शिष्य भी नहीं कोई सामग्री या उपकरण वह सब संघ का है किसी का व्यक्तिगत नहीं यह एक नया अभियान, प्रयोग आचार्य भिक्षु ने किया था। आचार्य भिक्षु का वह अभियान आज सुखदायी बना हुआ है।

आचार्य भिक्षु ने मूल बात को पकड़ा कि साधुसंस्था में उपशम का विकास होना चाहिए। उत्तेजना देने वाली परिस्थितियों को समाप्त किया जाना चाहिए उन्होंने एक बहुत बड़ा रास्ता चुना था, कलह, कषाय उपशांत रहे। कषाय का न होना ही चरित्र है।

जो व्यवस्थाएं दी है जड़ को पकड़कर दी है। आज भी अनेक अन्य सम्प्रदायों के साधुओं ने आचार्य तुलसी के समय में और आज तक कई बार सुना कि तेरापंथ जैसा संगठन होगा तभी कोई काम होगा। कोई भी संगठन शुद्ध और चीरजीवी तभी बन सकता है जब उस संगठन में क्रोध उपशांत, अहंकार उपशांत, लोभ उपशांत, ममत्व नहीं, छल-कपट नहीं होगा। ऐसे संगठन को कोई आंच भी नहीं दिखा सकता।

युवाचार्यश्री महाश्रमण ने फरमाया कि आचार्य भिक्षु में साहस और धैर्य था। संत भीखणजी के व्यापक सिद्धांतों को तटस्थ भाव से देखा जाए। आचार्य भिक्षु दुनिया के महापुरुष थे जिन्होंने अभिनिष्क्रमण किया और अपने सिद्धांतों का प्रतिपादन किया।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी ने कहा कि आचार्य भिक्षु उस व्यक्तित्व का नाम है कि जब तूफान सामने आता है तो तूफान पीछे हट जाता है। आचार्य भिक्षु के मन में कभी संदेह नहीं था उन्हें अपने सिद्धांतों और कार्य पर पूरा भरोसा था। उन्होंने शांति से बैठकर चिंतन किया कि मंजिल तक पहुंचना है तो रास्ता बदलो। शरीर के हर अवयव में विचार को भर दे तो सफलता प्राप्त हो सकती है। आचार्य भिक्षु शौर्य के साथ आगे बढे इसी तरह व्यक्ति शौर्य के साथ आगे बढ़ता है तो वह सफलता को प्राप्त कर सकता है।

इस अवसर पर मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुत विभा, साध्वी मयंकप्रभा, मुनि राजकुमार, मुनि किशनलाल, साध्वी जिनप्रभा, मुनि दिनेशकुमार ने एवं साध्वी समुदाय ने गीत और वक्तव्यों के माध्यम से अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। इसके अलावा श्रीमती सरोज दूगड़ ने गीत की प्रस्तुति दी। बजरंग जैन ने अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीतकुमार ने किया।